"राजनीतिक समाजशास्त्र का अध्ययन क्षेत्र"
SCOPE OF POLITICAL SOCIOLOGY

राजनीतिक समाजशास्त्र की प्रकृति और अध्ययन के विषय में अनेक विद्वानो ने अपने मत प्रकट किये है। सर्तोरी का कथन है कि इस सन्दर्भ में लिप्सेट और रोकान की उपलब्धियाँ महत्वपूर्ण है। लिप्सेट और रोकान ने अपनी पुस्तक Party System and Voter Alignment में स्पष्ट रूप से कहा है कि राजनीतिक समाजशास्त्र अन्तर्विषयक संकर (Interdisciplinary Hybrid) है जो राजनीतिक और सामाजिक व्याख्यात्मक चलों (Explanatory variable) की आत्म निर्भर किंतु अन्त: क्रियात्मक चलों के रूप में देखता है। आधुनिक समय में राजनीतिक समाजशास्त्र बहुत तीव्र गति से बढ़ रहा है किंतु क्या गति में तीव्रता से इसने परिपक्वता को भी प्राप्त कर लिया है? राजनीतिक समाजशास्त्र परिपक्व विषय है अथवा नही। यह ज्ञात करने के लिए हमें इसके अध्ययन क्षेत्र की विस्तृत चर्चा डॉ॰ शीला प्रसाद सिंह तथा राम तपस्वी प्रसाद ने की है उनके अनुसार राजनीतिक समाजशास्त्र का अध्ययन क्षेत्र निम्नानुसार है—

1. राजनीतिक क्रम की सामाजिक स्थापना (Social foundation of Political order) — राजनीतिक समाजशास्त्र की मान्यता है कि राजनीतिक क्रमबद्धता का निर्धारण सामाजिक संगठन और सांस्कृतिक मूल्यों के आधार पर होता है। राजनीतिक क्रम की सर्वाधिक महत्वपूर्ण समस्या यह है कि इसका निर्धारण शक्ति के लिए संघर्ष के आधार पर होता है।

2. राजनीतिक व्यवहार के सामाजिक आधार (Social Bases of Political Behaviour) — अपने इस क्षेत्र के अन्तर्गत "राजनीतिक समाजशास्त्री राजनीति में व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करते है। व यह जानने का प्रयास करते है कि व्यक्ति क्यो और किस प्रकार वोट देता है? उक्त वक्तव्य का अर्थ है कि व्यक्ति राजनीति में किस प्रकार की प्रेरणाओ से प्रेरित होकर राजनीति व्यवहार करता है। जैसा कि पारसंस और शिल्स ने तीन तरह के प्रेरणाओ (विश्वासात्मक, भावनात्मक और मूल्यांकित प्रेरणाओ) की चर्चा की है। मनोविज्ञानिकों का कथन है कि अपने इस विषय क्षेत्र के अन्तर्गत राजनीतिक समाजशास्त्र और मनोविज्ञान का त्रिवेणी का निर्माण होता है। इन तीन विषयों की अन्तर्विषयक पद्धतियों के आधार पर राजनीतिक समाजशास्त्र अध्ययन करता है।

CLASSMATE
Date :
Page :

3 राजनीतिक प्रक्रियाओं के सामाजिक पक्ष (Social Aspects of Political Process)

राजनीतिक समाजशास्त्र अपने क्षेत्र के अन्तर्गत राजनीतिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है जिनका विवरण निम्नलिखित है —

(i) राजनीति में संगठित समूहों के प्रकार (Organized Group in Politics) — प्रत्येक समाज में राजनीतिक प्रक्रियाओं के रूप में समूहों का गठन किया महत्वपूर्ण है। प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था में अलग-अलग तरह के कई समूह पाये जाते हैं जैसे भारतीय राजनीति समूह में पहला – वामपंथी विचार वाले समूह तथा दूसरा दक्षिणपंथी विचार वाले। दक्षिणपंथी समूहों में भी धार्मिक राजनीतिक समूह, भाषायी राजनीति समूह, क्षेत्रीय राजनीति समूह तथा जातीय राजनीति समूह आदि हैं जो राजनीतिक ध्रुवीकरण पर रोक लगाते हैं। इसके विपरीत अमेरिकी राजनीतिक व्यवस्था में केवल दो प्रकार के समूह होते हैं तथा रूस या चीन अथवा अन्य साम्यवादी राजनीतिक व्यवस्थाएं केवल एक राजनीतिक समूह का निर्माण की अनुमति देती हैं।

(ii) अन्तःक्रियाओं का आधार (Bases of Interactions) — राजनीतिक समाजशास्त्र राजनीतिक व्यवस्था के अन्तर्गत पाये जाने वाले समूहों में अन्तःक्रियाओं का अध्ययन करता है। इसके अन्तर्गत एक राजनीतिक समाजशास्त्री राजनीतिक आन्दोलन, राजनीतिक समूहों तथा हित समूहों के राजनीतिक व्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभावों के साथ-साथ यह भी अध्ययन किया जाता है कि ये राजनीतिक व्यवस्था को किस प्रकार परिवर्तित करते हैं या उन्हें स्थायित्व प्रदान करते हैं। लिपसेट का कथन है कि "प्रजातंत्र की सामाजिक स्थिति राजनीतिक समाजशास्त्र का केन्द्र बिन्दु है।"

इसी प्रकार से Greer तथा Orleans ने राजनीतिक समाजशास्त्र के निम्नलिखित विषय क्षेत्र बताये हैं —

1. राज्य की संरचना (The Structure of the State)
2. विधायिका की प्रकृति और स्थिति (The Nature and Condition of Legitimacy)
3. बल के एकाधिपत्य की प्रकृति और राज्य द्वारा बल का प्रयोग (The Nature of monoploy of force and its use by the State)
4. उप-इकाइयों की प्रकृति तथा राज्य से उनके सम्पर्क (Nature of Sub-Units and their Connection with State)

समाप्त